8945

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २६ अंक : ३
जून २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २६ **अंक - ३, जून** **२००२**

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	९९
२.	पाटलिपुत्र का इतिहास	पं० प्र० यतिश्री सूर्य्यमलजी महाराज	११०
३.	जैन दर्शन में पुनर्जन्म की मान्यता	समणी मंगल प्रज्ञा	११९
४.	जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा	श्री पृथ्वीराज जैन	१२४

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दुगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

सामाजिक– आज के कथित संस्कारित समाज में खाने-पीने के बाद पात्र में कुछ रख देने का विधान है। जो अन्न का अपमान और गरीब का घोर उपहास करता है। एक सर्वेक्षण में पाया गया है कि रोज २० लाख व्यक्ति भोजन कर सके इतना भोजन हम गटर में डाल देते है।

मानसिक-- मन इच्छा का सागर है। यह कभी भरता ही नहीं है। भोजन करते समय इच्छित वस्तु मिलने पर पूर्व का किया हुआ छोड़कर उसे लेते है, और पेट भरने पर जूठा छोड़ देते है। नियम होने पर भोजन कैसा भी हो करना ही पड़ेगा, परिणाम स्वरूप हम अपनी रसना पर संयम रख सकते है।

जैन धर्म का सूत्र है– **जीओ और जीने दो।**

मनुष्य लोक के निम्न भाग को अधोलोक, पाताललोक, नरकलोक कहते है। दुष्कर्म के परिणाम फल भोग करने के लिए जीव को नरक में जाना पड़ता है। इसके क्रमशः सात क्षेत्र (भाग) है। उत्तरोत्तर अधिक कष्टदायी अधिक समय के लिए (आयुष्य) वे नरक स्थान है।

	नाम	गोत्रनाम	गुण
१.	धम्मा	रत्नप्रभा	जिसमें रत्नवत् पत्थर है।
२.	वंशा	शर्कराप्रभा	जिसमें कंकर है पत्थर है।
३.	सेला	बालु प्रभा	जिसमें रेती है पत्थर है।
४.	अंजना	पंक प्रभा	किच्चड़ रत्नवत् है पत्थर है।
५.	रिष्ठा	धूम प्रभा	जिसमें धुआँ है पत्थर है।

६.	मघा	तमः प्रभा	जिसमें अंधकार है पत्थर है।
७.	माघवती	महातमः प्रभा	जिसमें घोर अंधकार है पत्थर है।

इस सात नरक के पर्याप्त और अपर्याप्त मिलकर १४ भेद है। इन क्षेत्र में जीव परस्पर लड़कर या परमाधामी से कष्ट पाकर दुःखी महादुःखी होते है। यहाँ का आयुष्य भी बहुत अधिक होता है। एक लोकोक्ति है। दुःख का दिन बड़ा होता है। दुष्काल में अधिक मास ।

इन नारकीय दुःखों से मुक्ति पाने के लिए जीव को हर समय जाग्रत रहना चाहिए । प्रमादवश मनकी कलुषित भावना के द्वारा ही जीव दुष्कर्म का बंध करके नरक दुःख का भागी बनता है। दुर्गति से बचने का एक ही उपाय है मन को पवित्र रखना ।

हमारा इस दृश्यमान विश्व से एक अलग विश्व है, जिसको देवलोक या स्वर्गलोक कहा जाता है। विभिन्न धर्म सम्प्रदायों की मान्यता है कि जीवात्मा जब इस मनुष्यलोक में मनुष्य या पशुरूप में पुण्य कर्म करता है, तब उस कर्म को भोगने के लिए जीव देवलोक में जाता है। जब पुण्य कर्म नष्ट हो जाता है तब इस संसार में कोई ना कोई रूप लेकर पुनः जन्म लेता है। यह देवलोक मनुष्यलोक के ऊपर के भाग में है। इस देवलोक में भी विभिन्न प्रकार के देव होते है। कोई स्वामी तो कोई सेवक होता है। उच्च-नीच, धनी, गरीब भी होता है। देवों के पास विशिष्ट शक्ति होती हैं। वे अपनी इच्छानुसार अलग-अलग शरीर धारण करते है, तथा जन्मगत अवधिज्ञान से एक सीमातक अदृश्य वस्तु को भी देखने में समर्थ होते है।

मुख्य देव चार प्रकार के हैं—

(१) भवनपति (२) व्यन्तर (३) ज्योतिषी (४) वैमानिक ।

वर्तमान में जैसे समुद्रतल (सी - लेवल) ऊँचाई माना जाता है। प्राचीन कालीन नियमों से मेरूपर्वत को केन्द्र बनाकर उसके समभूतल से भौगोलिक माप होता था। मेरुभूतल से ८०० योजन ऊपर और ८०० योजन नीचे इस प्रकार १८०० योजन तिरछा लोक है। नारकी जीव अधोलोक में मनुष्य जीव मध्यलोक में और देवता तीनों लोकों में विचरण करते है। चार

प्रकार के देव में से भवनपति अधोलोक में व्यन्तर और ज्योतिषी मध्यलोक में, तथा वैमानिक अर्धलोक में रहते है।

(१) **भवनपति** - प्रथम नरक के उपरी भाग में ये देव रहते है। विभिन्न भवनों में रहने के कारण वे देव भवनपति कहलाते हैं ।

भवनपति देव दस प्रकार के है।

(१) असुर कुमार (२) नागकुमार (३) सुवर्णकुमार (४) विद्युत कुमार (५) अग्निकुमार (६) उदधि कुमार (७) द्वीप कुमार (८) दिक् कुमार (९) वायु कुमार (१०) मेघ कुमार ।

नामानुसार इनके गुण है। वे देव हमेशा ही आनन्द में हंसते-खेलते रहते है, इसीलिये इन्हें कुमार कहा गया है ।

परमाधामी देव –इन देव का मुख्य स्वभाव ही होता है अन्य को दुःख देना । अन्य को दुःख देकर ही वे आनन्दित होता है । परम –अत्यधिक - अधार्मिक -परमाधार्मिक - परमाधामी नाम से परिचित है। इनका मुख्य काम है नारकी जीव को उनके कर्मानुसार अलग-अलग रूप बनाकर दुःख देना ।

परमाधामी देव १५ प्रकार के है।

१०+१५=२५, भवनपति देव है।

(२) **व्यंतर देव** - मनुष्य के अत्यन्त निकट रहने के कारण वे देव व्यन्तर कहलाते है। वि-विगता-अन्तर - दूरी अर्थात जिसकी दूरी नष्ट हो गई है उससे सज्जन, चक्रवर्ती योगी की सेवा करते है । अपने पूर्व भव की दुश्मन या किसी के निर्देशानुसार अन्य को कष्ट भी देते है। इनके दो भेद है। व्यंतर - वाणव्यन्तर । वे दोनों आठ भाग में तथा एक-एक उत्तर और दक्षिण में विभाजित करके १६ भागों में विभाजित किया जाता है।

तिर्यग जृंभ देव — वैताट्य पर्वत में रहने के कारण ये देव तिर्यग् जृंभ कहलाते है। ये भी उत्तम साधन, तीर्थंकर, धर्मी जीव की सेवा करता है। ये देव १० प्रकार के है।

व्यन्तर	८
वाण व्यन्तर	८
तिर्यग् जंभ -	१०
	२६ व्यन्तर .

(३) **ज्योतिष्क देव** – इस दृश्य संसार में चित्र-विचित्र रचनाएं है। इसमें कुछ दृश्य है तो कुछ अदृश्य है। कुछ प्रत्यक्षरूप में हमारे उपकारी है तो कुछ अप्रत्यक्षरुप में हमें लाभान्वित करते है। कुछ पदार्थ हमारे से अत्यधिक दूर होने पर भी हमारे लिए महान उपकारी है। आकाश मंडल में कुछ घूमता-फिरता तो कुछ स्थिर प्रकाश पुंज है। जिसका प्रभाव हमारे जीवन में पड़ता है। हमारे कर्मानुसार वे हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। वे हमेशा ज्योति-प्रकाश फैलाने के कारण ज्योतिष्क कहलाते है।

सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, तारा ये पाँच प्रकार के ज्योतिष है। इनमें स्थिर और चर मिलाकर १० प्रकार होते है।

हमारे इस क्षेत्र में दो सूर्य, दो चन्द्र, ८८ ग्रह, २९ नक्षत्र और असंख्य तारे आकाश मंडल में है। वे सभी मेरु पर्वत को केन्द्र बनाकर अविरत घूमते रहता है। इसी कारण दिन-रात सर्दी, गर्मी, वर्षा आदि नियमित समय पर प्रारंभ और समाप्त होता है। जैन दर्शन के मतानुसार पृथ्वी स्थिर है और सूर्य चन्द्रादि घूमता रहता है। आज तक वैज्ञानिकों की मान्यता थी कि पृथ्वी घूमती है, पर अभी-अभी कुछ नया संशोधक संशोधन करके प्रभावित किया है कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्यादि घूम रहा है। जैन दर्शन तो हमेशा से ही कहता आया है कि पृथ्वी स्थिर है। सूर्य-चन्द के विषय में भी वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है कि आज जो सूर्य उदित होता है वह कल नहीं आता है।

जैन दर्शन के मतानुसार सूर्यादि का दूरत्व समभूतल से तारा-७०० योजन, सूर्य-८०० योजन, चन्द्र – ८८० योजन, नक्षत्र - ९८४ योजन, ग्रह - ९०० योजन है। अपनी-अपनी दूरी पर रहकर अपने मार्ग पर चलकर मेरुपर्वत की प्रदक्षिणा करता है। परिणाम स्वरूप यहाँ मौसम में परिवर्तन होता है और दिनरात्रि बनता है। आजके वैज्ञानिक नया-नया संशोधन करके

रोज नई-नई बाते करते रहते है। वे अपना ही सिद्ध किये हुए सिद्धान्त को असिद्ध कर देते है।

आज हम धर्मशास्त्र की बाते विश्वास न करते हुए अर्धदग्धज्ञानी वैज्ञानिक को अधिक विश्वास करते है। उसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे सामने है- आज से २६०० वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने वनस्पति में जीवतत्व का प्रतिपादन किया था, पर लोगों ने उसे अस्वीकार कर दिया। आज से कुछ वर्ष पूर्व डॉ. जगदीश चन्द बोस ने वनस्पति में जोवतत्व सिद्ध किया तब सारे संसार ने स्वीकार किया । इसी प्रकार पृथ्वी सूर्य-चन्द्र के विषय में भी जो धारणा है वह टूटेगी और हम उस सत्य तक अवश्य ही पहुँचेगे। जो हजारों वर्षों पूर्व भगवान महावीर आदि अनेक तीर्थंकर बता गये हैं। इस संसार में १३२ सूर्य, १३२ चन्द, असंख्य तारा और नक्षत्र है। इसमें से कुछ स्थिर और कुछ चर है। इन सूर्यादि का परिभ्रमण पथ अलग-अलग होने से कहीं दिन-रात्रि मौसम में भेद होता है। कहीं-कहीं तो छः महिना दिन और छः महिना रात्रि, कहीं हमेशा ही दिन या रात्रि, कहीं अधिक गर्म तो कहीं बर्फ ही बर्फ है।

सूर्य-चन्द्र-ग्रह-नक्षत्र-तारा ये पाँच के चर और स्थिर मिलाकर १० भेद है।

(४) **वैमानिक देव**– विमान में ही जन्म और मृत्यु जिसका होता है उसे वैमानिक देव कहते है। वे देव उत्तरोत्तर ऊपर की होता है।

बारह देवलोक — (१) सौधर्म (२) इशान (३) सनत्कुमार (४) महेन्द्र (५) ब्रह्मलोक (६) लांतक (७) महाशुक्र (८) सहस्रार (९) आनत (१०) प्राणत (११) आरण (१२) अच्यूत ।

इनमें सभी का आचार व्यवहार अलग-अलग होता है। इन बारह देवलोक में १ से ८ तक प्रत्येक में एक में इन्द्र होता है। ९,१० का एक इन्द्र, ११,१२ का एक इन्द्र होता है। पाँचवे देवलोक के पास नवलोकान्तिक देव रहते है। वे तीर्थंकर परमात्मा के दीक्षा पूर्व, उन्हें दीक्षा के लिए प्रेरणा देते है। प्रथम देव लोक, तृतीय देवलोक और छठ देवलोक के नीचे तीन किल्बिषिक देव रहते है।

सबसे ऊपर ९ ग्रैवेयक और ५ अनुत्तर देव का विमान है।

कल्पोपन्न और काल्पातित, इस प्रकार देवों के दो भाग है।

कल्पोपन्न – जहाँ आचार, नियम, मर्यादा छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच आदि की व्यवस्था हो उसे कल्पोन्न कहते है।

कल्प-आचार-। उपन्न -समाज, समूह में जन्म ।

कल्पातित – जहाँ कोई नियम, मर्यादा, छोटा बड़ा नहीं है, जहाँ हर एक व्यक्ति स्वयं-स्वयं का अनुशास्ता है उसे कल्पातित कहते है।

भवनपति से १२ देवलोक तक देव कल्पोपन्न कहलाते है। नव ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर के देव कल्पातित कहलाते है।

अपार सम्पत्ति, रूप, समृद्धि के मालिक इन देवों को भी देव आयुष्य पूर्ण होने पर पुनः मनुष्य या पशु के रूप में जन्म लेना पड़ता है। वैदिक दर्शन में उसी अभिशाप या पाप का भोग के लिए प्रायश्चित कहते है। जैन दर्शन की मान्यता भी वही है, पर परिभाषा में अन्तर है। वेद इसके लिए भगवान को कर्ता रूप में स्वीकार करते है। जैन दर्शन कर्म की व्यवस्था को स्वीकार करता है।

इस सम्पूर्ण संसार की व्यवस्था कर्म के आधार पर महानैसर्गिक शक्ति करती है।

देव के भेद—

असुर कुमारादि भवनपति	–	१०
परमाधामी	–	१५
व्यन्तर	–	०८
वाणव्यन्तर	–	०८
तिर्यंग् जृंभ	–	१०
चर ज्योतिष	–	०५
स्थिर ज्योतिष	–	०५
सौधर्मादि १२ देवलोक वैमानिक	–	१२
लोकान्तिक	–	०९

किल्बिषक	–	०३
ग्रैवेयक	–	०९
अनुत्तर	–	०५
	कुलदेव	९९

इनके पर्याप्त और अपर्याप्त ९९ x २ = १९८ देव का भेद है।

इन देव लोकों में भी १२वें देवलोक तक मनुष्य जैसे ही राजा प्रजा की व्यवस्था होती है। इनके राजा को इन्द्र कहा जाता है। सभी देवों में कुल ६४ इन्द्र है।

१० भवनपति (एक दो-दो)	–	२०
८ व्यन्तर ,,	–	१६
८ वाण व्यन्तर ,,	–	१६
ज्योतिषी (चर-स्थिर)	–	०२
१ से ८ देवलोक एक-एक	–	०८
९,१० देवलोक में	–	०१
११-१२ ,,	–	०१
	कुल इन्द्र	६४

कुल जीवों की संख्या–

पृथ्वी कायादि स्थावर जीव		
एकेन्द्रीय जीव	–	२२
विकलेन्द्रीय, २, ३, ४, इन्द्रीय जीव	–	०६
तिर्यंच पंचेन्द्रिय	–	२०
मनुष्य ,,	–	३०३
नरक ,,	–	१४
देव ,,	–	१९८
	कुल	५६३

इन जीवों को कर्मानुसार सुख-दुःख, आयुष्य, जाति, शरीर आदि मिलता है। कर्मानुसार ही जीवात्मा इस संसार में भटकता रहता है। जो जीवात्मा सभी कर्मो से मुक्त हो जाता है उस दिन जीव परमपद मोक्ष, सर्वच्चदानन्द, पद को प्राप्त कर लेता है। फिर उनको इस संसार में पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता है।

इस उपरोक्त दुःखदायी संसार से मुक्त होना हो तो विशिष्ट जीवन जीने के लिए प्रयत्न प्रारंभ करना चाहिए। जब तक उच्च कक्षा का जीवन उपलब्ध न कर पाये, तब तक निम्नोक्त बातों का सावधानी पूर्वक पालन करना चाहिए।

(क) जिसमें हमसे अधिक गुण हो, उससे ईर्ष्या न करें । हर व्यक्ति के पास गुणी का गुणगान अवश्य करें । इस प्रकार की प्रवृत्ति से हमें अपूर्व आनन्द की अनुभूति हो सकती है।

(ख) सभी जीवों के साथ मैत्री भावना ही रखे, क्योंकि आप जैसी भावना रखेंगे। वैसी भावना आप पर अन्य की जगेगी ।

(ग) जो दुःखी है हमसे छोटे है उनकी सेवा, सहायता करे। सेवा-सहायता करने की शक्ति या समय न हो तो भावना रखे। उन्हें सुविधा सुयोग की व्यवस्था करने के लिए सहयोग करें ।

(घ) जहाँ हमारी कुछ भी करने की शक्ति न हो, असमर्थता हो वहाँ माध्यस्थ भाव रखे। स्वयं को समदृष्टा बनाये रखे।

इन भावनाओं से हम अनेकता से मिट कर एकता में, या एकता की भावना में सम्मिलित होगें। अनेकता की भावना ही राग-द्वेष का कारण है। और इस राग-द्वेष से ही संसार का विनाश होता है।

शरीर युक्त आत्मा को जीवात्मा कहते है। शरीर से मुक्त जीव को परमात्मा कहते है। शरीर और आत्मा दोनों भिन्न-भिन्न धर्म हैं। आत्मा चेतन युक्त है तो शरीर जड़ पुद्गल हैं। आत्मा के कर्मानुसार ही पुद्गल परमाणु एकत्रित होकर शरीर का निर्माण करता है। जैसा कर्म होता उसी के अनुरूप परमाणु होने के कारण संसार के प्रत्येक व्यक्ति का रूप अलग-अलग है। एक समान दो व्यक्ति कहीं नहीं देखने को मिलता है।

वे ५६३ जीव का भेद तो एक दृष्टि कोण से देखा गया है। वैसे तो जीव के असंख्य भेद है। एक अन्य दृष्टि से जीवों के ८४ लाख योनी भेद कहा गया है। उतने ही जीवों के भेद समझे ।

आत्मा और शरीर सर्वथा भिन्न है। जब तक धर्म रहता है तब तक आत्मा को शरीर धारण करना ही पड़ता है। आत्मा इस पौद्गलिक शरीर को त्याग देनेपर निर्जीव हो जाता है। इस विषय में एक सिद्ध पुरुष का स्वयं का अनुभव यहाँ प्रस्तुत है।

आन्ध्रप्रदेश के एक छोटे गाँव में रमण नाम का एक बच्चा अपने माता-पिता परिवार के साथ रहता था। रमण अभी बच्चा ही था उसी समय किसी मारक रोग के कारण उसके पिता की मृत्यु हो गई। इस विषय में रमण अभी अपिरिचित था। मृत्यु क्या चीज है वह नहीं जानता था। रमण अपने मित्रों के साथ बाहर खेल रहा था। अपने घर में बहुत सारे अपरिचित व्यक्ति आते देख कर, रमण भी खेल छोड़कर घर के अन्दर गया। वहाँ देखता है कि उसके पिताजी बीच में सोये है, और चारों ओर आदमी घेर कर बैठे है। कोई किसी से बात नहीं कर रहा है। जीवन में रमण ने यह दृश्य प्रथम बार देखा। बड़े भाई को पूछने पर इतना जान पाये कि पिताजी गये, उसने देखा पिताजी तो सोये है, और भैया कह रहे है कि पिताजी गये, क्या बात है? एक अपरिचित भय के कारण रमण अपने पिता के पास जाकर स्पर्श नहीं कर पाये पर खड़े-खड़े देखते रहे। बात समझ में नहीं आ रही थी। सभी की बात रमण को बारम्बार सुनने मिल रहा था, पिताजी गये पर वे कुछ भी समझ नहीं पाया। कुछ समय के बाद सभी मिल कर शवदेह को उठा कर ले गये। चिन्तन शील रमण का प्रश्न अब महाप्रश्न बन गया। शरीर तो यहीं पड़ा है, गये तो कौन गये? और कहाँ गये? परिवार जनों की शोकमग्नता और व्यस्तता का लाभ उठाकर पास के एक मंदिर में रमण एकान्त बैठकर सोचने लगे कौन गया? और कहाँ गया है? सोचते-सोचते वे ध्यानस्थ हो गये। ध्यानावस्था में उन्हें भीतर से उत्तर मिला। शरीर तो पर जीवात्मा जो इस शरीर का संचालक था वह चला गया। वही चिन्तनशील बालक आगे चल कर महानयोगी पुरुष

रमण महर्षि के नाम विश्व में ख्याति प्राप्त किये। शरीर और आत्मा अलग है जैसे-सिंह, सिंह है, गाय एक गाय है। गाय और अपने-अपने स्तर पर परिवर्तन हो सकता है। पर गाय कभी सिंह या सिंह कभी गाय नहीं बन सकता है। कभी-कभी हम स्वयं को शरीर से भिन्न करते हुए शब्द का प्रयोग करते है। हम शायद अपनी आत्मा के विषय में पूर्ण अपरिचित है, फिर भी स्वभावतः ऐसे वाक्य का प्रयोग करते है जो स्वतः आत्मतत्व सिद्ध हो जाता है। जैसे–आज मेरा शरीर दर्द कर रहा है, मेरा पैर टूट गया, मेरा दाँत दुःख रहा है इत्यादि। उपरोक्त वाक्य कहने वाला शरीर से कोई अन्य व्यक्ति है। जो शरीर पर मालिक का अधिकार रखता है। हमें हमारी बचपन की स्मृति यदि आती है। शरीर तो बदल जाता है, पर उन स्मृतियों को याद रखते है। वे सब कार्य जीवात्मा का है।

आज के वैज्ञानिक भी इसका उत्तर देने में असमर्थ है। वे वैज्ञानिक भी आज आत्मा जैसी कोई एक शक्ति को स्वीकार कर चुके है। अमेरिका में एक वैज्ञानिक संस्था आत्मा पर शोध कर रही है, उनका विश्वास है कि वे एक दिन अपने शोध पर अवश्य सफल होगें। परिणाम स्वरूप धनी व्यक्ति करोड़ो डॉलर देकर पूनर्जीवित करने के लिए अपने शरीर को प्रयोगशाला में सुरक्षित रखवाये है।

एक व्यक्ति अपने मित्र के घर दरवाजे पर जाकर मित्र को आवाज देता है। मित्र का पुत्र बाहर आकर कहता है—चाचा! पिताजी नहीं है। यहाँ पर नहीं, वस्तु का अस्तित्व कहीं न कहीं अवश्य स्वीकार करता है। वस्तु के अस्तित्व में ही ना शब्द का प्रयोग होता है। आप फूल वाले के पास जाकर आकाश का फूल मागेंगे तो, हमारे यहाँ नहीं है ऐसा उत्तर नहीं देगा। क्यों कि जिसका अस्तित्व ही नहीं है उसके साथ नहीं प्रयोग करना ही असंभव है। जैसे—इस जंगल में सिंह नहीं है। यह व्यक्ति चोर नहीं है अर्थात सिंह अन्य जंगल में है और चोर अन्य कोई व्यक्ति है।

एक अन्य उदाहरण — एक मुनि के प्रवचन में अनेक व्यक्ति प्रवचन सुनने आते थे। इसमें एक बैरिस्टर भी नियमित रूप से प्रवचन में आते थे।

प्रवचन में एक दिन आत्मा की बात चली। बैरिस्टर ने प्रश्न किया—मैं प्रत्यक्ष प्रमाण के बिना कोई भी वस्तु को स्वीकार नहीं करता हूँ? मुनि श्री समझ गये कि व्यक्ति तार्किक है। ये तर्क की भाषा ही समझते है। मुनि श्री ने कहा—श्रीमान आप तो वुद्धिमान है। प्रश्न करके स्वीकार की मुद्रा में हाँ कहे। मुनि श्री श्रोतागण को सम्बोधित करते हुए बोले –धर्म प्रेमी हमारे बीच उपस्थित बैरिस्टर साहब वुद्धिमान है पर उन्हें आत्मा पहचानने में असुविधा हो रही है। मैं श्रीमान् से चाहूँगा कि वे अपनी बुद्धि का थोड़ा नमूना मुझे देवे। मैं उसके अनुरूप आत्मा मिलाकर उन्हें बता दूँगा। बैरिस्टर निरुत्तर हो गये अन्त में वे अदृश्य आत्मा को सहजता से स्वीकार कर लिये। सभी वस्तु प्रत्यक्ष होने पर स्वीकार ही करना चाहिए ऐसा सिद्धान्त नहीं है। क्यों कि हम जब कोई रेलवे लाइन के बीच खड़े होकर देखते है तो अनुमान होता है, आगे की लाइन छोटी होती जा रही है। पर वास्तविकता इससे अन्य है।

प्रत्येक इन्द्रियों का अपना-अपना अलग-अलग विषय है।

चर्म	-	स्पर्श से अनुभव करने का धर्म है।
जीभ	-	स्वाद ,, ,, ,, ,,
नाक	-	सूंघकर ,, ,, ,,
आँख	-	देखकर ,, ,, ,,
कान	–	शब्द सुनकर ,, ,, ,,

क्रमशः

पाटलिपुत्र का इतिहास

पं० प्र० यतिश्री सूर्य्यमल जी महाराज

राजानन्द तथा उनके मंत्री कल्पकका विवरण ।

राजा उदायी के स्वर्गारोहण करने के बाद न तो उनके कोई सन्तान थी, न कोई निकट सम्बन्धी ही था, जो उनका उत्तराधिकारी बनाया जाता; अतएव राज्य कायम रखने के लिए पाँच दिव्य राजकुल में फिराये। पंच दिव्य इन्हें कहते हैं :—पद हस्ती, प्रधान अश्व; जलकुम्भ, छत्र और चामर। (उस समयकी यह प्रथा थी, कि जब कभी ऐसी सन्देह युक्त टेढ़ी समस्या उपस्थित होती तब पाँच दिव्य छोड़े जाते और वे दिव्य वस्तुएं जिसे स्वीकार करतीं, उसी को यह कार्य भार सौपा जाता था। इसी नियम के अनुसार पंच दिव्य फिराये गये थे।) ज्योंही वे नगर में फिर रहे थे, त्योंही सामने से पालकी में बैठा हुआ एक मनुष्य आता दिखाई दिया। उसे देखकर पद हस्ती ने उसके मस्तक को जल पूर्ण कुम्भ से अभिषेक किया और सूँड़ से उठाकर उसे अपने मस्तक पर बैठा लिया। और दिव्यों ने भी अपना-अपना कार्य दिखलाकर उसे स्वीकार किया। जैन शास्त्र के अनुसार यह भाग्यवान् पुरुष वेश्या की कुक्षि से जन्मा हुआ नापितका पुत्र था और इसका नाम नन्द था। उसने एक दिन स्वप्न में पाटलिपुत्र नगर को अपनी आँखों से (वेष्ठित) लिपटा हुआ देखा। नींद खुलने पर वह स्वप्नोपाध्याय पास गया और स्वप्नके विषय में पूछा। उपाध्याय ने उस उत्तम स्वप्न का वृत्तान्त सुन बड़ी प्रीति पूर्वक नन्द को अपनी लड़की ब्याह दी और उसको रत्नआभूषणों से अलंकृत करके पालकी में बैठाकर, नगर-यात्रा कराने के लिये निकाला था, कि दिव्यों से मुलाकात हो गयी। (किन्तु अन्यान्य शास्त्रों के मत से नन्द शुद्ध क्षत्रिय वंश का राजा था।) पंच-रत्न दिव्यों के स्वीकार कर लेने पर मन्त्रियों तथा नगर वासी महापुरुषों ने मिल कर सानन्द नन्द को महोत्सव पूर्वक राज्याभिषेक किया। भगवान् महावीर स्वामी के निर्वाण से ६० वर्ष बाद राजा उदायी की राजधानी का मालिक यह पहला नन्द हुआ।

उसी नगर में कपिल नामका एक ब्राह्मण रहता था, उसके एक बालक पैदा हुआ। नाम संस्कार के दिन कपिल ने अपने पुत्र का नाम कल्पक रखा। जब वह बालक विद्याभ्यास करना शुरु किया। प्रज्ञावान् होने से कल्पक थोड़े ही समय में शास्त्रज्ञ तथा दक्ष हो गया। कल्पक बचपन से ही जितेन्द्रिय और नेकनियत था। अतएव सर्वसाधारण मनुष्यों की दृष्टि में वह प्रामाणिक गिना जाता था। कुछ दिन के बाद माता-पिता के स्वर्गवास होने पर कल्पक सर्व प्रकार से स्वतन्त्र हो गया। उस समय पाटलिपुत्र में कल्पक के समान विद्वान गुणवान और दक्ष दूसरा कोई न था। इस लिये वह समस्त नगर वासियों का पूज्य था। एक दिन राजा नन्द ने कल्पककी बड़ी प्रशंसा सुनी। अतएव राजा ने पंडित और बुद्धिमान समझकर कल्पक को राज-सभा में बुलाया तथा प्रधान मन्त्री का पद ग्रहण करने की उससे प्रार्थना की। कल्पक बड़ा सन्तोषी तथा निर्लोभी था। अतः उसने राजा की प्रार्थना सुनकर यह उत्तर दिया, कि महाराज! मैं अपने निर्वाह मात्र के सिवा अधिक परिग्रह नहीं रख सकता। इस प्रकार राजा नन्द की (अवज्ञा) नाफरमानी करके वह अपने घर चला गया। कल्पक का इस प्रकार का उत्तर सुन, राजा नन्दका चित्त क्रोध से भर गया; किन्तु कल्प क को प्रधान मंत्री बनाने की लालसा उसके मन से दूर न हुई उसके लिये वह नाना प्रकार के प्रपंच रचने लगा, जिससे वह इस पद को स्वीकार कर ले। दैवात् एक दिन कल्पक नन्दके प्रपंच में फँस गया। और क्रोध के आवेश में एक धोबी की हत्या कर डाली। पीछे राजदण्ड के भय से स्वयं ही राजसभा में जाकर उपस्थित हुआ। उस समय सभा के सदस्य भी प्रायः उपस्थित न थे। इस प्रकार बिना बुलाये कल्पक राजसभा में आया देख, राजा नन्द बहुत प्रसन्न हुए और शिष्टाचार के बाद फिर उसे प्रधान मन्त्री पद ग्रहण करने का आग्रह करने लगे। कल्पक बड़ा दक्ष और अवसर का जानकार था। अतएव उसने उसी वक्त राजा का कहा मान लिया तथा प्रधान मंन्त्री की मुद्रा धारण कर राजा नन्द के बराबर बैठ गया। राजा ने कल्पक का बड़ा आदर किया और उस दिन से उसको गुरु के समान समझने लगा। राजा के मन में बहुत दिनों से कई बातों की शंकायें थीं। उन शंकाओं को निवारण करनेवाला अब तक कोई पण्डित उसे नहीं मिला था। अब इस अवसर को प्राप्त करके राजा अपने

को धन्य समझता हुआ उन शंकाओं के बारे में कल्पक से पूछने लगा और कल्पक भी अपनी योग्यता के अनुसार राजा की शंकाओं को (निर्मूल) दूर करने लगा। इस प्रकार दोनों में हार्दिक मैंत्री हो गयी। राजा और मन्त्री दोनों परस्पर आनन्द अनुभव करते हुए सुख पूर्वक रहने लगे। कल्पक के मन्त्री पद स्वीकार करने पर राजा नन्दकी राज्य लक्ष्मी दिन पर दिन बढ़ने लगी और उनका प्रताप दसों दिशाओं में फैल गया। सारांश यह, कि कल्पक के मन्त्री पद पर आसीन होने पर राजा और प्रजा दोनों सुखी तथा प्रसन्न रहते थे किन्तु एक आदमी बहुत ही दुःखी था और वह पहला प्रधान मन्त्री था जो पद से भ्रष्ट होने के कारण ईर्ष्यादि से उसका हृदय भीतर-ही-भीतर जलता रहता था। अतः कल्पक को नीचा दिखाने तथा फिर से अपने पद को पाने के लिये वह (अनवरत यत्न) पूरी कोशिश करने लगा। किसी का परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता आखिर उसका भी परिश्रम सफल हुआ। उसकी कूटनीति ने राजा नन्द को अन्धा बना दिया। दुर्भाग्यवश राजा ने बिना कुछ समझे-बूझे मन्त्री कल्पक को सपरिवार पकड़ कर अन्धकूप में कैद कर दिया और उन लोगों के खाने-पीने के लिये बहुत ही कम अन्न जल दिये जाने की व्यवस्था कर दी। कल्पक के कैद होने की बात जब चारों तरफ फैल गयी, तब शत्रु राजाओं के आनन्द की सीमा न रही। सबने अपनी-अपनी सेना सुसज्जित कर पाटलिपुत्र को घेर लिया। यह हालत देखकर राजा नन्द के होश उड़ गये और मारे घबराहट के उसका हृदय काँपने लगा। इस समय राजा को कल्पक की उपयोगिता याद आयी और वह उसके लिये व्याकुल हो उठा। वह बार-बार यही कहता, कि आज यदि कल्पक होता, तो राजधानी की यह दुर्दशा कदापि नहीं होती। इसलिये अब भी उस अन्ध कूप में देखना चाहिये, कि कल्पक जीता है या नहीं। ऐसा सोचकर राजा ने नौकरों को आज्ञा दी, कि जल्दी खबर लाओ कि कूप में कल्पक जीता है या नहीं कल्पक को बाहर निकाला। उस समय उसकी अवस्था बड़ी ही शोचनीय हो रही थी। उसका सारा शरीर पीला पड़ गया था और हिलने डोलने या चलने फिरने की भी उसमें शक्ति न थी; किन्तु उसे जीवित देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और पालकी में बैठा कर वह उसे किले में आये। उचित चिकित्सा तथा खान-पान का उपयुक्त प्रबन्ध करके शीघ्र ही

कल्पक को भला-चँगा बना लिया। अच्छे हो जाने पर कल्पक शत्रु राजा के मन्त्री से मिला और संकेत के द्वारा बात चीत की। यद्यपि शत्रु के मन्त्री ने कल्पक के भाव को भलिभाँति न समझ सका तथापि उसकी तीव्र बुद्धि और तेज शक्ति के सामने ठहर न सकने के कारण वह अपने राजा को राजा नन्द की राजधानी से लौटा ले गया! कल्पक की बुद्धि के प्रभाव से विपक्षी राजाओं के चले जाने पर राजा नन्द ने उस चाल बाज पुराने मन्त्री को उचित शिक्षा देकर, निकाल दिया और कल्पक के ऊपर पूर्ववत पूज्यभाव रखने लगा।

श्रीस्थूल भद्र

मन्त्री कल्पक ने कारागार से मुक्त होने पर फिर अपनी शादी कर ली थी। अतएव उसके पुत्र-पौत्रादि सन्तति बहुत हो गयी थीं। कल्पक की मृत्यु के बाद भी उसके बंशज ही नन्द वंश के राजाओं के मन्त्रि पद पर आसीन रहे। क्रमशः राजा नन्द की गद्दी पर जब आठ नन्द-राजा हो चुके तब परम प्रतापी नवम नन्द राजा हुआ और उनका मन्त्री उसी कल्पक के वंश का शकडाल हुआ। शकडाल भी बड़ा ही बुद्धिमान, धार्मिक तथा कल्पक के ही समान सर्वगुण लंकृत था। इसके दो पुत्र हुए। बड़े का नाम स्थूल भद्र और छोटे का नाम श्रीयक था। स्थूल भद्रजी विनयादि गुणयुक्त तो थे, ही किन्तु इनकी बुद्धि बड़ी स्थूल थी और श्रीयक माता-पिता का भक्त तीक्ष्ण बुद्धि तथा बहुत बड़ा चतुर था। वह बराबर अपने पिता के साथ राज-सभा में जाया करता था। इसलिये बड़े होनेपर उसे राजा नन्द ने विश्वास पात्र और प्रीति पात्र समझकर अपने अंगरक्षक के पद पर नियुक्त किया। स्थूलभद्रजी का चित विषय वासना की ओर विशेष झुका रहता था। अतः उसी नगर में रहने वाली एक कोश्या नामक वेश्या से प्रेम हो गया। और रात दिन वह उसी कोश्या वेश्या के घर रहने लगे।

पाटलिपुत्र नगर में उस समय एक वररुचि नामक ब्राह्मण रहता था। वह व्याकरणादि सब शास्त्रों में बड़ा कुशल और कविता बनाने में बड़ा दक्ष था। प्रति दिन राज-सभा में जाता और अपनी बनायी हुई कविताओं को सुनाकर राजाका मनोरंजन किया करता था किन्तु राजाको ओर से पारितोषिक

में कुछ भी नहीं मिलता था। राजा की इच्छा थी कि मन्त्री जब इनकी प्रशंसा करें, तब पारितोषिक दें; पर मन्त्री कभी ऐसा नहीं करते थे। यह बात कवि को मालूम हो गयी। उसने मन्त्री के घर जाकर उनकी पत्नी की सेवा-शुश्रुषा की और राज सभा में अपनी कविताओं की प्रशंसा मन्त्री के द्वारा कराने की उनसे कोशिश की आखिर स्त्री के कहने से मन्त्री ने एक दिन राजसभा में वर रुचि की कविता की प्रशंसा की। उस दिनसे नित्यप्रति वररुचि को एक सौ आठ स्वर्णमुद्राएं (मुहरें) दी जाने लगीं। कुछ दिन बाद इतना अधिक (व्यय) खर्च मन्त्री शकडाल को पसन्द नहीं आया और उसने अनेक उपाय करके राज दरबार से मुहरों का दिया जाना बन्द करा दिया जिस दिन से वर-रुचि का यह अपमान हुआ, उस दिन से वर रुचि ने मन्त्री शकडाल का (छिद्रान्वेषण) करना शुरु किया। दैव योग से उसी समय मन्त्री के छोटे पुत्र श्रीयक का विवाह होने वाला था। इस अवसर पर मन्त्री राजा नन्द को अपने घर बुलाकर उनका सम्मान करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने छत्र, चमर तथा अनेक उत्तमोत्तम शस्त्र तैयार करा रहे थे। यह बात एक दासी के द्वारा वररुचि को मालूम हो गयी। बस फिर क्या था? उसने झट एक श्लोक बना कर शहर के कितने ही लड़कों को याद करा दिया। वह श्लोक इस प्रकार था—

"नवेत्ति राजा यह सो शकडालः करिष्यति।
व्यापाद्य नन्द तद्रोज्ये श्रीयक स्थापयिष्यति।।"

अर्थात्—जो शकडाल करने वाला है, सो राजा नहीं जानता। नन्द को मारकर उसके राज्यपर अपने पुत्र श्रीयक को स्थापित करेगा। नगर के लड़कों ने यह बात सारे शहर में फैला दी। परम्परा से राजा के कानतक भी जा पहुंची। इस बात के सुनने से राजा के मन में सन्देह हो गया और उन्होंने पता लगाने के लिये मन्त्री के घर पर अपने नौकरों को भेजा। नौकरों ने शकडाल के घर जाकर शस्त्रों को बनाते देखा और जो देखा, सो वैसे ही राजा से कह दिया। यह सुनकर राजा का मन मन्त्री की ओर से एकदम फिर गया। राज सभा में मन्त्री के आनेपर राजा ने मारे कोप के उसके साथ बातें करनी तो दूर, उसकी ओर देखा तक नहीं। मन्त्री बड़ा बुद्धिमान था। वह

झट समझ गया कि आज जरूर किसी ने राजा से मेरी चुगली खायी है, इसी से राजा कुपित हुआ है। राजा को प्रतिकूल देखकर शकडाल शीघ्र ही घर चला आया और अपने पुत्र श्रीयक से कहा—किसी दुश्मन ने राजा का मन मेरी तरफ से फेर दिया है। अतएव यदि शीघ्र उपाय न किया गया, तो मेरे सहित समस्त कुटुम्ब का नाश हो जायेगा। इस संकट से बचने का एक मात्र उपाय यही है, कि मैं जब राज-सभा में जाकर राजा को प्रणाम करूं, तब तुम तलवार से मेरा सिर काट डालना और यों कहना, कि राजा या स्वामी का अभक्त पिता भी मार डालने योग्य है। ऐसा करने से मेरे सिवा सारा कुटुम्ब बच सकता है। पहले तो श्रीयक ऐसा निर्दय कार्य करने से बहुत हिचकिचाया और उसने आँखों में आँसू भरकर अपने पिता से कहा, कि आप ऐसा नीचातिनीच अत्यन्त गर्हित कर्म करने की मुझे आज्ञा न दीजिये, परन्तु अन्त में मन्त्री के बहुत कुछ समझाने-बुझाने पर उसने वैसाही करना स्वीकार कर लिया और भरी सभा में अपने पिता का सिर काट डाला। यह हालत देखकर सभा के सब लोग काँप उठे इसी समय राजा ने बड़े मीठे बचनों से कहा,—हे वत्स! तूने यह क्या दुष्कर्म किया?

इसपर श्रीयक बोला,—स्वामिन्! जब आपके मनमें यह आया, कि अमुक आदमी हमारा अपराधी है, तो आपके भक्तों को उचित है, कि उसे उसी समय शिक्षा दें।

यह सुन, राजा नन्द श्रीयक की प्रशंसा करता हुआ बोला—श्रीयक! सर्वाधिकार सहित इस प्रधान मुद्रा के योग्य तू ही है। अतएव इस मुद्रा को ग्रहण कर।

श्रीयकने विनय पूर्वक राजा से कहा,—स्वामिन पिता के समान मेरे बड़े भाई स्थूलभद्रजी विद्यमान हैं। उनके रहते मैं कैसे इस मुद्रा का अधिकारी हो सकता हूं?

राजा ने स्थूल भद्र को बुलाकर उसे प्रधान मन्त्री की मुद्रा देने को कहा। स्थूल भद्र भी विचार कर उत्तर देने की प्रतिज्ञा कर लौट आये और एकान्त में बैठकर विचारने लगे। उस समय अकस्मात् उन्हें वैराग्य आ गया। मन्त्री पद की कौन कहे, उन्हें भूपति का पद भी दुःखदायी दिखने

लगा। सारा संसार दुःखसे भरा है। इसी लिये अब आत्मोद्धार का प्रयत्न करना चाहिये। ऐसा विचार कर स्थूल भद्र जी ने वहाँ बैठे-ही-बैठे सिरके केशों का लोच कर डाला। और उनके पास जो रत्न-कम्बल था, उसे खोल उसकी रस्सियों से (ओघा) रजोहरण बना लिया। इसी वेश से राज-सभा में जाकर उन्होंने राजा से कहा, —मैंने लोच कर लिया है यह कहकर और राजा को (धर्म लाभ) आशीर्वाद देकर स्थूलभद्र राजसभा से चले गये। महात्मा स्थूलभद्र ने श्रीसंभूति विजयजी आचार्य के पास जाकर विधि पूर्वक दीक्षा ग्रहण कर ली। वे उसी दिन से निरतिचार चारित्रका पालन करते हुए विचरने लगे।

एक दिन कई साधुओं ने आचार्य महाराज के पास आकर चातुर्मास व्यतीत करने के विषय में अपनी-अपनी इच्छा प्रकट की। किसी ने कहा कि मैं चार मासतक आहार का त्याग कर कायोत्सर्ग ध्यान से सिंह की गुफा के दरवाज पर चातुर्मास व्यतीत करना चाहता हूँ। किसी ने कहा कि मैं दृष्टि विष सर्प के बिलपर और किसी ने मेंडक के आसन से कुएँ की मणपर रहकर चातुर्मास व्यतीत करने की आज्ञा माँगी गुरु महाराज ने भी सबको योग्य समझकर प्रत्येक की इच्छा के अनुसार आज्ञा दे दी। तब श्री स्थूल भद्रजी महाराज भी गुरु महाराज से विनय पूर्वक बोले,—भगवन्! मैं पाटलिपुत्र में रहनेवाली कोशानामक वेश्याकी चित्र शाला में रह कर षट् रस भोजन करता हुआ चातुर्मास पूर्ण करूँ, यही मेरा अभिग्रह है। गुरु महाराज ने इन्हें भी आज्ञा दे दी। और मुनिगण अपने-अपने अभीष्ट स्थानपर चले गये। और उन महात्माओं के तप के प्रभाव से सिंहादि पशु सब शान्त हो गये। इधर श्रीस्थूल भद्रजी को देखकर विचारा कि ये प्रकृति से सुकुमार हैं अतएव चारित्र का बोझ इनसे सहन न हो सका; अतः ये चले आ रहे हैं। कोशा ऐसा विचारकर हाथ जोड़कर खड़ी हो गई और स्वागत पूर्वक बोली, — स्वामिन्! तन, मन, धन—सब आपका है। आज्ञा दीजिये, मैं क्या करूँ।

श्री स्थूलभद्र बोले,— मुझे और कुछ न चाहिए, तेरी उस चित्र शाला की आवश्यकता है। मुझे वहीं चातुर्मास रहना है। वेश्या ने बड़े हर्ष के साथ

इस बात को स्वीकार किया, और मुनिजी वहाँ रहने लगे। कोशा भी श्रीस्थूलभद्र के षट् रस आहार कर लेने पर उन्हें संयम से विचलित करने के लिये सोलहों श्रृंगार करके चित्रशाला में आकर अनेक प्रकार से हाव-भाव दिखाने लगी, कभी पहले समय में बारह बरसतक श्रीस्थूलभद्रजी ने कोश्या के मकानपर रहकर उसके साथ जो विषय सुख भोगा था, उसको कितनी ही गुप्त बातों को याद करा कर उन्हें मोहित करना चाहती थी, किन्तु महाधैर्यवान् श्रीस्थूलभद्रजी चलायमान न हुये, बल्कि कोश्या वेश्या के हाव-भावों से दिन-दिन श्रीस्थूलभद्र जी के हृदय में ध्यानाग्नि देदीप्यमान होती गयी।

उस समय सबही संयोग कामदेव को उद्दीपन करने वाले थे। एक तो वर्षाकाल, दूसरे चित्रशाला का मकान, तीसरे कोश्या का अनुपम रूप और काम चेष्टाएं—इतने साधन होने पर भी उन महामुनि के मन का भाव जरा भी विचलित न हुआ। तब तो कोश्या बहुत शर्मिंदा हुई और हाथ जोड़कर अपनी कुचेष्टा के लिये क्षमा प्रार्थना की। वर्षाकाल व्यतीत होनेपर वे तीनों मुनि और श्रीस्थूलभद्रजी घोर अभिग्रहों को पूरा करके गुरु महाराज के पास आये। गुरु महाराज ने भी और मुनियों के आने पर थोड़ा-थोड़ा और स्थूलभद्रजी के आने पर एकदम आसन से उठकर स्वागत किया। उन्होंने उन तीनों मुनियों को दुष्करकारक और स्थूलभद्रजी को दुष्कर कारक कह कर सम्बोधन किया। इस प्रकार स्थूलभद्रजी की प्रतिष्ठा सब मुनियों से अधिक हुई तथा चारित्र पालन में तो ये उस समय अद्वितीय हो गये। इसके बाद श्रीस्थूलभद्रजी तीव्र तपस्याएं करते और अनेक प्रकार के अभिग्रहों को धारण करते हुए पृथिवीतलपर विचरने लगे।

चन्द्रगुप्त चरित्र

राजा नन्द के बाद पाटलिपुत्र के राज्यासन पर महाप्रतापी चन्द्रगुप्त राजा हुए। एक समय राजा नन्द की सभा में चाणक्य नामका एक ब्राह्मण धन पाने की इच्छा से आया और राजा के सिंहासन पर बैठ गया। उस आसन पर राजा नन्द के सिवा और कोई न बैठता था। राजा के भद्रासन पर चाणक्य को बैठा देख, (परिचायक) नौकरने पृथक एक आसन बिछा दिया

और विनय पूर्वक कहा, कि आप उस आसन पर से उठकर इस पर बैठ जाइये, किन्तु चाणक्य ने राज्यासन को नहीं छोड़ा बल्कि उस दूसरे आसन पर अपना कमण्डलु रख उसे भी रोक दिया। इस प्रकार नौकरों ने कई आसन बिछाये, पर उसने उनपर भी दण्ड तथा माला आदि वस्तुएँ रख दी और उन सबको भी रोक दिया। इस पर नौकरों ने मारे क्रोध के कुछ ऊँच-नीच शब्द कहते हुए चाणक्य को अपमान के साथ उतार दिया। इस अपमान से चाणक्य मारे क्रोध के आग हो गया और उसकी आँखे लाल हो गयीं। उसने अपनी शिखाको खोल भरी सभा में प्रतिज्ञा की, कि जब तक इस अन्यायी और अभिमानी राजा नन्द को राजगद्दी से न उतार लूंगा, तबतक इस शिखा को न बाँधूंगा। ऐसी भीषण प्रतिज्ञा करके वह चला गया और राजा नन्द को उन्मूलित करनेका यत्न करने लगा। चाणक्य ने राजा नन्द की गद्दी पर चन्द्रगुप्त नामक एक बालक को बैठाने का पूर्ण संकल्प कर लिया और वह उस बालक को अपने साथ रखने लगा। चन्द्रगुप्त के सम्बन्ध में अनेकानेक मत-भेद है। जैनशास्त्रों के अनुसार चन्द्रगुप्त का जन्म मयूर पोषक के वंश में हुआ था। इस की कथा इस प्रकार है :-

क्रमशः

जैन दर्शन में पुनर्जन्म की मान्यता

समणी मंगल प्रज्ञा

दार्शनिक जगत् में आत्मवाद एवं पुनर्जन्म के संदर्भ में कुछ मान्यताएं प्रचलित हैं—

१. आत्मा है पुनर्जन्म नहीं है।

२. पुनर्जन्म है आत्मा नहीं है।

३. आत्मा एवं पुनर्जन्म दोनों ही नहीं हैं।

४. आत्मा एवं पुनर्जन्म दोनों ही हैं।

ईसाई एवं इस्लाम धर्म आत्मा की सत्ता को तो स्वीकार करते हैं किन्तु क्रमिक पुनर्जन्म की सत्ता स्वीकार नहीं करते। बौद्धदर्शन अनात्मवादी है, फिर भी वह कर्मवाद एवं पुनर्जन्मवाद के सिद्धान्त को चित्तसंतति के आधार पर स्वीकार करता है।

चार्वाक् दर्शन आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म आदि किसी भी अतीन्द्रिय पदार्थ की सत्ता को स्वीकार ही नहीं करता है।

अन्य भारतीय दर्शन आत्मा, परमात्मा एवं पुनर्जन्म इन तीनों की सत्ता स्वीकार करते हैं।

इन दर्शनों ने आत्मा की त्रैकालिक सत्ता को स्वीकार किया है। यद्यपि आत्म स्वरूप के सम्बन्ध में उनमें परस्पर मतैक्य नहीं है किन्तु आत्मा की त्रैकालिक स्वीकृति वे सब एक स्वर से करते हैं। आचारांग में कहा गया-

---

१. आयारो ४/४६

नहीं होता उसका मध्य भी कैसे होगा? आगमकार तत्त्वप्रतिपादन में युक्ति का अवलम्बन प्रायः नहीं लेते हैं। किन्तु आत्मा के अस्तित्व की सिद्धि में आचारांगकर्त्ता इस महत्त्वपूर्ण तर्क का आश्रय ले रहे हैं। आत्मा वर्तमान में है, इससे स्पष्ट होता है कि आत्मा का पूर्व में अस्तित्व था तथा भविष्य में उसका अस्तित्व रहेगा। आत्मा की त्रैकालिक सत्ता को स्वीकृति पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म के सिद्धान्त की स्पष्ट अभिव्यक्ति है।

पुनर्जन्म का आधार— दार्शनिक दृष्टि का मूल आधार पुनर्जन्मवाद है एवं पुनर्जन्मवाद के चार स्तम्भ हैं–

१. आत्मावाद, २. लोकवाद, ३. कर्मवाद एवं, ४. क्रियावाद।[२] भगवान् महावीर आत्मवादी थे। उन्होंने अनुभव तथा साक्षात्कार को प्रधानता दी। वे जानते थे कि तर्क के द्वारा स्थापित पक्ष प्रतितर्क से निराकृत हो जाता है, किन्तु साक्षात्कार किया हुआ तत्त्व सैंकड़ों तर्कों से भी खण्डित नहीं होता। इसलिए भगवान् ने साक्षात्कार के मार्ग को मुख्यता दी। जिसको पूर्वजन्म की स्मृति हो जाती है, वह वस्तुवृत्त्या आत्मवादी होता है। उसको आत्मा के अस्तित्व में शंका नहीं रहती। आत्मा के त्रैकालिक अस्तित्व की स्वीकृति होने पर लोकवाद, कर्मवाद एवं क्रियावाद का स्वीकार होना स्वाभाविक है।

'जैसे मैं हूं' इसी तरह अन्य प्राणी भी हैं। लोक के भीतर ही जीवों का अस्तित्व है। जीव अजीव लोक समुदाय हैं। इस प्रकार मानने वाला लोकवादी कहा जाता है।[३] आत्मवादी लोकवादी भी होगा।

जाति-स्मृति से आत्मा और पुद्गल के सम्बन्ध का भी ज्ञान होता है। आत्मा का पुद्गल (कर्म) के योग से ही दिशा अनुदिशाओं में संचरण होता है। पुद्गल (कर्म) स्वयं आत्मा के द्वारा आकृष्ट किये हुए हैं। अपना किया हुआ कर्म अपने को ही भुगतना होता है–यह कर्मवाद की स्वीकृति है– अणुसंवेयणमप्पाणेणं।[४] कृत कर्म में किसी अन्य का संविभाग नहीं हो सकता।

---

२. वही १ / ५ से आयावाई, लोगावाई, कम्मावाई, किरियावाई

३. आचारांगचूर्णि, पृ. १४

४. आयारो ५ / १०३

आत्मा और कर्म का सम्बन्ध क्रिया के द्वारा ही होता है। जब तक आत्मा में राग-द्वेष जनित प्रकम्पन विद्यमान हैं, तब तक उसका कर्म परमाणुओं के साथ सम्बन्ध होता रहता है। इसलिए कर्मवाद क्रियावाद का उपजीवी है। जाति स्मृति से इन तथ्यों का साक्षात्कार हो जाता है। व्यक्ति सच्चाई को आत्मसात् कर लेता है। तब उसका आचरण सम्यक् हो जाता है।

उद्गम की जिज्ञासा– सभी शास्त्रों का प्रारम्भ प्रायः किसी-न-किसी जिज्ञासा से होता है। ब्रह्मसूत्र का प्रारम्भ सृष्टि के मूल कारण की जिज्ञासा से हुआ।[१] मीमांसासूत्र का प्रारम्भ धर्म अर्थात् कर्तव्य की जिज्ञासा से हुआ–अथातो धर्मजिज्ञासा।[२] सांख्य दर्शन का प्रारम्भ दुःख निवृत्ति के उपायों की जिज्ञासा से हुआ है।[३] वैसे ही आचारांग सूत्र का प्रारम्भ भी साधक अपने मूल उद्गम को जानने की इच्छा से करता है। मैं कहां से आया हूं।[४] आचारांग का प्रवक्ता पुनर्जन्म के अस्तित्व में संदिग्ध नहीं है। उसका संकेत पुनर्जन्म के अस्तित्व के संदर्भ में विद्यमान अज्ञान की ओर है। उसका अभिमत है कि बहुत से व्यक्तियों को यह ज्ञान ही नहीं है कि उनकी आत्मा पुनर्जन्म लेने वाली है अथवा पुनर्जन्म नहीं लेने वाली है। वर्तमान जीवन से पहले आत्मा किस रूप में थी और भविष्य में यहां से च्युत होकर किस रूप में होगी–"एवमेगेसिं णो णातं भवति–अत्थि में आया ओववाइए, णत्थि में आया ओववाइए, के अहं आसी? के वा इओ चुओ इह पेच्चा भविस्सामि।"[५] आचारांग के प्रस्तुत सूत्र में पुनर्जन्म के विचयसूत्र उपलब्ध हैं। मैं कौन था–यह पूर्वजन्म के संज्ञान का विचय सूत्र है। परलोक में मैं क्या होऊंगा?–यह भावी जन्म के संज्ञान का विचयसूत्र है। अर्थात् आत्मा की भूत पर्याय एवं भावी पर्याय का अनुसंधान करने वाले सूत्र हैं।

---

१. ब्रह्मसूत्रम् (संपा. उदयवीर शास्त्री, दिल्ली, १९९१) १/१/१ अथातो ब्रह्मजिज्ञासा

२ मीमांसादर्शनम् (संपा. उदयवीर शास्त्री, दिल्ली, १९९१) १/१/१

३. सांख्यकारिका, श्लोक, १ दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघात के हेतो

४. आयारो १/१

५. वही, १/२

पूर्वजन्म की ज्ञप्ति के हेतु– क्या आत्मा की अतीतकालीन एवं भविष्यकालीन अवस्था का संज्ञान किया जा सकता है? इस जिज्ञासा के समाधान में भगवान महावीर ने प्रतिपादन किया कि पूर्वजन्म का ज्ञान किया जा सकता है।

आचारांग में इसके तीन हेतुओं का निर्देश हुआ है–

१. स्वस्मृति,

२. पर व्याकरण

३. दूसरों के पास से सुनना[६]

१. **स्वस्मृति**—जाति का पहला हेतु स्वस्मृति है। स्वयं को स्वतः ही पूर्वजन्म की स्मृति हो जाना स्वस्मृति है। कुछ बच्चों को बाल्यावस्था में ही पूर्वजन्म की सहज स्मृति प्राप्त होती है। आधुनिक परामनोवैज्ञानिकों ने पूर्वजन्म की स्मृति से सम्बन्धित अनेक घटनाओं का संग्रह किया है तथा उन घटनाओं की यथार्थता असंदिग्ध है।

२. **पर-व्याकरण**– किसी आप्त के साथ व्याकरण अर्थात् प्रश्नोत्तरपूर्वक मनन पर कोई उस पूर्वजन्म के ज्ञान को प्राप्त कर लेता है। प्राचीन व्याख्या के अनुसार पर-व्याकरण का तात्पर्यार्थ है–तीर्थंकर द्वारा व्याख्यात। आचारांग निर्युक्ति में भी परव्याकरण को जिन-व्याकरण माना है, क्योंकि जिन से उत्कृष्ट कोई नहीं है।[१] मेघकुमार को भगवान महावीर ने जाति स्मृति करवायी थी। आचारांग वृत्ति में गौतम् का उदाहरण भी उल्लिखित है। गौतम ने पूछा था–भगवन् ! आपके प्रति मेरा यह स्नेह किस कारण से है? तब भगवान् ने उसके साथ अनेक जन्मों का पूर्व सम्बन्ध बतलाते हुए कहा–गौतम! तुम्हारा मेरे साथ लम्बे समय तक संसर्ग रहा है। तुम मेरे चिरपरिचित हो।[२] तीर्थंकर

---

६. वही, १/३ सेज्जं पुण जाणेज्जा–सहसम्मुइयाए, परवागरणेणं, अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा।

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ६६ परवइवागरणं पुण जिणवागरणं जिणा परं नत्थि।

२. अंगसुत्ताणि२, भगवती १४/७७ चिरसंसिट्ठोसि मे गोयमा! चिर परिचिओसि मे गोयमा।

की इस वाणी को सुनकर गौतम को विशिष्ट दिशागमन आदि का ज्ञान हो गया था।[३] दिशागमन ज्ञान से व्यक्ति जान लेता है कि वह किस दिशा से, कहां से आया है। यह पूर्वजन्म की स्मृति कराने वाला ही प्रतीत होता है।

३. **अन्य के पास श्रवण**— बिना पूछे किसी अतिशयज्ञानी के द्वारा स्वतः ही निरूपित तथ्य को सुनकर कोई पूर्वजन्म का संज्ञान कर लेता है।

पूर्वजन्म स्मृति के हेतु—कुछ व्यक्तियों को पूर्वजन्म की स्मृति जन्मजात नहीं होती लेकिन निमित्त मिलने पर वह उद्‌बुद्ध हो जाती है। सुश्रुत संहिता में कहा गया है कि पूर्वजन्म में शास्त्राभ्यास के द्वारा भावित अन्तःकरण वाले मनुष्य को पूर्वजन्म की स्मृति हो जाती है—

भावितः पूर्वदेहेषु सततं शास्त्रबुद्धयः।
भवन्ति सत्त्वभूयिष्ठाः पूर्वजातिस्मरा नराः।[४]

आचारांग-भाष्य में पूर्वजन्म की स्मृति के तीन कारणों की मीमांसा हुयी है—

१. मोहनीय कर्म का उपशम,
२. अध्यवसान शुद्धि (लेश्या विशुद्धि),
३. ईहापोहमार्गणागवेषणाकरण।[५]

१. उपशान्त मोहनीय— मोहनीय कर्म के विशिष्ट प्रकार के उपशम से भी जाति-स्मृति पैदा हो सकती है। उत्तराध्ययन के 'नमिपवज्जा' अध्ययन में ऐसा उल्लेख मिलता है—

उवसंतमोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं।[६] उसका मोह उपशांत था जिससे उसे पूर्वजन्म की स्मृति हो गयी।

२. अध्यवसान शुद्धि— मृगापुत्र ने साधु को देखकर जाति-स्मृति प्राप्त की। इस प्रसंग में मोहनीय के उपशम और अध्यवसान-शुद्धि का एक साथ उल्लेख है—

---

३. आचारांगवृत्ति, पृ. १४तीर्थकृद् व्याकरणमाकर्ण्य गौतमस्वामिनो विशिष्टदिगागमनादिविज्ञानमभूदिति।
४. सुश्रुत संहिता, (संपा. डॉ. अनन्तराम शर्मा, वाराणसी, २००१) शारीर स्थान २/५७
५. आचारांग भाष्य सूत्र १-४, पृ. २१
६. उत्तरज्झयणाणि ९/१

क्रमशः

जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा

श्री पृथ्वीराज जैन

हमारे आचार्यों ने इस समस्या पर भी गहन विचार किया है। उनका कथन है कि एक जीव हमें मारता हुआ या कष्ट पाता हुआ दृष्टिगोचर होता है, इतने मात्र से ही हिंसा नहीं हो जाती। हिंसा के दो रूप हैं–द्रव्य और भाव। एक व्यक्ति की प्रवृत्ति से एक जीव कष्ट पाता हुआ या मरता हुआ हमें स्पष्ट दिखाई देता है। उस व्यक्ति की प्रवृत्ति का स्थूल परिणाम हमारे सम्मुख है, यह द्रव्य हिंसा है। हमें एक व्यक्ति की जो हिंसा पूर्ण प्रवृत्ति दिखाई देती है, उसकी पृष्ठभूमि में उस व्यक्ति की आत्मा के परिणाम भी हैं जिनसे प्रेरित हो वह व्यक्ति उस विशिष्ट प्रवृत्ति में प्रवृत्त हुआ। उन परिणामों की कलुषता का नाम भाव हिंसा है। हिंसा-अहिंसा का निर्णय करते हुए हमें तथा कथित हिंसक जीव के आन्तरिक भावों पर भी विचार करना पड़ता है। हमारे कार्यों का जो स्थूल परिणाम बाह्य रूप में गोचर होता है, वह हमेशा आन्तरिक भावना के अनुकूल ही उत्पन्न नहीं होता। प्रायः ऐसा होता है कि एक व्यक्ति किसी के हित की दृष्टि से काम करता है परन्तु परिणाम अहितकर होता है। दूसरी ओर हम वैर की भावना से किसी पर आक्रमण करना चाहते हैं किन्तु सफल मनोरथ नहीं होते।

इस विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिए हम कुछ लौकिक उदाहरण लें। एक डाक्टर रोगी की चिकित्सा के लिये उसे औषध देता है या उसका ऑपरेशन करता है। डाक्टर की भावना यही है कि रोगी का कष्ट दूर हो जाय। वह अपनी शक्ति के अनुसार तन्मय हो रोगी के आराम के लिए भरसक परिश्रम करता है। फिर भी किसी कारण से रोगी की मृत्यु हो जाती है। तो क्या डाक्टर इस हत्या का अपराधी है? नहीं। हर समझदार यह स्वीकार करेगा कि डाक्टर की आन्तरिक भावना उसे मारने की कदापि न थी। किसी ब्राह्य निमित्त के कारण ऐसा हुआ। अतः डाक्टर हिंसक नहीं कहा जा सकता।

दूसरी ओर एक हत्यारा व्यभिचारी या चोर है। हत्यारा खून करने के उद्देश्य से कहीं जाता है। पता लग जाने पर, वार खाली जाने से या किसी और कारण से उसका शिकार बच जाता है। एक व्यभिचारी दुष्भावना से प्रेरित हो किसी स्त्री पर कुदृष्टि डालता है परन्तु स्त्री का तेज कहिए या अन्य कोई सहायता समझिए, वह उसके सतीत्व हरण में असफल रहता है चोर चोरी के ध्येय से कोई चीज चुराने जाता है। लोगों के जाग जाने पर उसके मन के मन की अभिलाषा मन में ही रह जाती है। ऐसी परिस्थिति में हत्यारा, व्यभिचारी और चोर अपराधी है अथवा नहीं? मानना होगा कि उन्होंने हिंसा या पाप उसी क्षण कर डाला जब उनके मन में इसका विचार आया। बाह्य रूप से तो हिंसा नहीं हुई, किन्तु हिंसक भावना के कारण वे हिंसक समझे जायेंगे और लौकिक तथा आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से दण्ड के लिए अपराधी सिद्ध होंगे।

इसी लिए श्री उमास्वाती ने तत्त्वार्थ सूत्र (७-८) में कहा है 'प्रमत्तयोगात् प्राणध्यपरोपणं हिंसा' अर्थात् प्रमाद अर्थात् कषाय की भावना के वशीभूत हो मन, वचन या काय रूपी योग से किसी के प्राणों का अपहरण भी हिंसा कहलाता है।

दशवैकालिक की टीका में हिंसा के चार भंग किए गए है।

१. द्रव्यतः और भावतः–एक शिकारी मृगवध की भावना से बाण मारता है और मृग मर जाता है।

२. द्रव्यतः न भावतः–साधु ईर्यासमिति पूर्वक चलता है परन्तु फिर भी किसी जीव की हत्या हो जाती है।

३. भावतः न द्रव्यतः–रस्सी को सांप समझ कर एक आदमी अंधेरे में ही उसे मारने काटने लगता है।

४. न भावतः न द्रव्यतः–यह भंग शून्य है ऐसी हिंसा संभव ही नहीं।

इन में पहली और तीसरी अवस्थायें ही बंधकारी हिंसा की कोटि में आती हैं। क्षमाश्रमण जिनभद्रगणि ने भी विशेषावश्यक भाष्य (गण १७६६) में अशुभ आंतरिक परिणाम को ही हिंसा कहा है। दशवैकालिक (७-८) में गौतम स्वामी ने पूछा कि एक व्यक्ति कैसे चले, कैसे खड़ा हो, कैसे बैठे, कैसे

सोए, कैसे खाय, कैसे बोले जिससे पाप कर्म का बंध न हो। भगवान् ने उत्तर दिया कि यतना (विवेक और सावधानी) पूर्वक ये सब कार्य करते हुए पाप कर्म का बंध नहीं होता। अतः यह निश्चित है कि जीव रक्षा का विवेकपूर्ण प्रयत्न करना ही अहिंसा है, जीवन निर्वाह के लिए जो अनिवार्य जीववध हो, वह अशुभ कर्म बन्ध का कारण नही। प्रवचन सार (३-१७) में कहा गया है कि कोई जीव मरे या न मरे, परन्तु यदि मनुष्य जीव रक्षा का ठीक-ठीक प्रयत्न नहीं करता है तो वह हिंसक है। ठीक-ठीक प्रयत्न करने पर वह हिंसक नहीं है। दुष्कृत्य और सुकृत्य के निर्णय की कसौटी आंतरिक भावना है, शरीर की क्रिया नहीं। एक ही शरीर से एक व्यक्ति अपनी पुत्री का भी आलिंगन करता है और पत्नी का भी। क्रिया एक जैसी होने पर भी उसकी भावना में महदन्तर है।

साधु और गृहस्थ धर्म :— भगवान् महावीर ने साधुओं के लिए सर्वविरति तथा गृहस्थियों के लिए देशविरति का उपदेश दिया है। भिक्षु का कर्तव्य है कि वह हिंसा, असत्य, धैर्य, मैथुन तथा परिग्रह रूप पापों का सर्वथा त्याग करे। मन, वचन, काय द्वारा वह न तो स्वयं पापमय प्रवृत्तियों में प्रवृत्त हो, न उन्हें दूसरों से कराए तथा न इन कार्यों के करने वाले व्यक्ति का समर्थन ही करे। अहिंसा आदि पांच महाव्रतों के पालन में उसकी दृढ़ता उत्तरोत्तर बढ़ती जाय, इस उद्देश्य से वह सदा हिंसादि दोषों के कारण होने वाले अनर्थ और गर्हित पापों पर विचार करता है, इन दोषों में दुःख देखता है। साधु निवृत्ति मार्ग का आश्रय लेता है, इसका तात्पर्य इतना ही है कि वह दोषों से निवृत्त होता है और आत्मा के गुणों के विकास में प्रवृत्त होता है। निवृत्ति का अर्थ यह नहीं है कि सब प्रकार के कार्यों से छुट्टी पा लेता है। दोषों से बचने पर इतना जोर इस लिये दिया गया है कि दोषों के रहते हुए एक व्यक्ति जो कार्य करेगा वह सर्वथा शुद्ध न होगा यही कारण है कि तीर्थंकर केवल ज्ञान की प्राप्ति से पूर्व प्रायः मौन रहते हैं। आत्मा के गुणों को आच्छादित करने वाला पर्दा जैसे ही दूर हो जाता है, आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रगट होने में देर नहीं लगती। तब आत्मा साम्य भाव की प्राप्ति कर जो भी प्रवृत्ति करता है, वह शुद्ध लोक कल्याण के भावों से ओत प्रोत होती है, विवेक और सावधानी पूर्वक की जाती है। संन्यास मार्ग के पथिक अपने रास्ते से विचलित

न हो जाय इस ध्येय से जैनागमों में उनके पथप्रदर्शन के लिए विस्तार से नियमोपनियम निर्दिष्ट हैं। वे इस बात के प्रमाण हैं कि जैनाचार्यों की दृष्टि कितनी सूक्ष्म थी।

गृहस्थ जीवन बिताने वाले व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि वह महाव्रतों का पूर्ण रूप से पालन कर सके। उसके लिए यह आदेश है कि वह स्थूल हिंसादि का त्याग करे। जीवन यात्रा में सूक्ष्म हिंसा से निर्लिप्त रहना संभव नहीं हो सकता। अतः श्रावकों से यह आशा की जाती है कि वे ऐसी हिंसा में ही प्रवृत्त हो जो अत्यन्त अनिवार्य है। जिस परिणाम में जिस पाप से अपनी आत्मा को बचाया जा सकता है, उससे आत्मा की रक्षा करनी चाहिए। श्रावक ऐसे व्यवसाय न करे जिनमें घोर हिंसा होती हो या अधिक प्राणियों का वध होता हो। उसका भोजन भी ऐसी वस्तुओं का होना चाहिए जिसमें जीवों के घात का अनुपात कम से कम हो। अहिंसादि पांच अणुव्रतों के अतिरिक्त श्रावक के लिये तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत भी उपादेय बताए गये हैं इस प्रकार १२ व्रत धारी गृहस्थ जैन श्रावक कहलाता है। वह आत्मोन्नति के लक्ष्य को विस्मृत नहीं करता। क्रमशः उसी ओर बढ़ता जाता है। श्रावक का मुख्य धर्म मर्यादा बांध कर जीवन निर्वाह करने का है। दोष त्याग के शुद्ध आदर्श को सम्मुख रख कर और उस आदर्श तक पहुंचाने की सतत कोशिश करते हुए मछुए आदि भी मर्यादा बांध कर किसी दृष्टि से अहिंसक हो सकते हैं। एक कथा है कि एक जैन मुनि ने एक भील से केवल कौए के मांस का त्याग कराया था। समय आने पर यही आंशिक त्याग उस के आत्म-कल्याण का निमित्त बन गया।

क्रमशः

आवाँ के पास ९वीं सदी का जैन मंदिर मिला

कोटा से करीब ४३ किलो मीटर दूर स्थित आवाँ गाँव के पास ९वीं शताब्दी के एक अति प्राचीन जैन मंदिर का पता चला है। इतिहास और पुरातत्व के दस्तावेजों में अब तक ओझल रहे इस मंदिर को राजस्थान में जैन धर्म के प्रारंभिक दिनों का मंदिर बताया जा रहा है। इस कारण इसे ऐतिहासिक और पुरातात्विक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इसकी जर्जरावस्था को देखते हुए राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग की स्थानीय इकाई ने इसे संरक्षित स्मारकों की सूची में रखवाने के प्रयास शुरु कर दिये हैं। सांगोद तहसील के आवाँ गाँव के पास दक्षिण पूर्व दिशा में कुछ दूरी पर यह मंदिर स्थित है। करीब ११०० सालों से मौसम की लगातार मार के साथ-साथ उपेक्षा के थपेड़े झेलते आ रहा यह देवालय अब मात्र पत्थरों का एक ढ़ांचा सा प्रतीत होता है। यह इतनी जर्जरावस्था में पहुँच चुका है कि ऐसा लगता है कि हवा के हल्के-से झोंके से अभी गिर पड़ेगा। यह किस्मत की बात है कि अभी तक ऐसा नहीं हुआ है, लेकिन जरूरी नहीं है कि भाग्य हमेशा ही मेहरबान रहे। कोटा वृत्त के पुरातत्व अधीक्षक सत्यप्रकाश श्रीवास्तव कहते हैं, यदि शीघ्र ही इस ओर ध्यान नहीं दिया गया, तो ऐतिहासिक और स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण यह मंदिर कभी भी धराशायी हो सकता है।

जैन तीर्थंकर ऋषभनाथ का यह ९वीं शताब्दी का मंदिर प्रतिहार वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है। इसके शिखर से लेकर गर्भगृह तक की हालत काफी दयनीय है। मंदिर का शिखर लगभग २५ फुट ऊँचा है, जो भूरे बलुए पत्थर से निर्मित है। इसमें दो शिलाएँ लाल पत्थर की भी हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि इन्हें बाद में लगाया गया होगा। शिखर में लगी *लूज* शिलाएँ कभी भी गिर सकती हैं और इस प्रकार एक शानदार धरोहर का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। गर्भगृह साधारण है, जिसमें एक प्रतिमा है, लेकिन उसके आधे दबे होने व उस पर सिंदूर पुते होने के कारण वह फिलहाल पहचान से परे है। मंदिर का सबसे आकर्षण भाग उसका प्रवेश द्वार है।

यह चतुर्शिखा शैली का है, जो बेलबूटों से सज्जित व नक्काशीदार है। इस प्रवेश द्वार के ललाट शिखर पर भगवान ऋषभनाथ तीर्थंकर की बुद्ध पद्मांजलि मुद्रा में करीब डेढ़-दो फुट की एक प्रतिमा लगी हुई है। इस प्रतिमा की बायीं ओर दायीं ओर अन्य तीर्थंकरों की प्रतिमाएं हैं। श्री श्रीवास्तव ने बताया कि यह मंदिर एक खेत में है, जो सरकारी भूमि का ही एक हिस्सा है। उनका मानना है कि क्षेत्र में एक भी जैन परिवार न होने के कारण इस मंदिर के बारे में लोगों को पता नहीं पाया होगा। यहाँ पूजा-पाठ नहीं होती है और इस वजह से यह खंडहर सा दिखता है। हालाँकि आवाँ गाँव में अनेक ऐतिहासिक मंदिर हैं, लेकिन इस मंदिर की खोज से इतिहास पर नया प्रकाश पड़ सकता है।

साभार—जिनन्दू

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 475-2730, 476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242.
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-55715

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Kolkata - 700 026
Phone : 476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA RARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

S. VINAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

Aangan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007
Phone : 227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140
(Resi) 352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 220-4779/0131/5721

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

MANIK CHAND MANOJ KUMAR
11, Clive Row, 3rd Floor, Room No. 4,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-4131/4756

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Phone : 220-0874/9372/221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C.
Kolkata - 700 019
Phone : 287-0448

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharai

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharai

From :-

M/s Phool Chand Kharai & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 233-1609, 239-8628

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016

Tel : 229 8228, Fax : 229 3882, 245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)229-8228,

Registered Office: Subhash House, F-27 2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020

Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003; Regional Office: 8 2 Ulsoor Road,

Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design, Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3- 6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7- 8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9- 11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti/ Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Bandyopadhyay Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1 Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE: SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45/2002
Vol. XXVI No. 3 TITTHAYARA June 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225